श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः

श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज

की वाणी

श्रीयुगलशतक

"संतों, सेव्य हमारे श्रीपियप्यारे, वृन्दाविपिन विलासी"
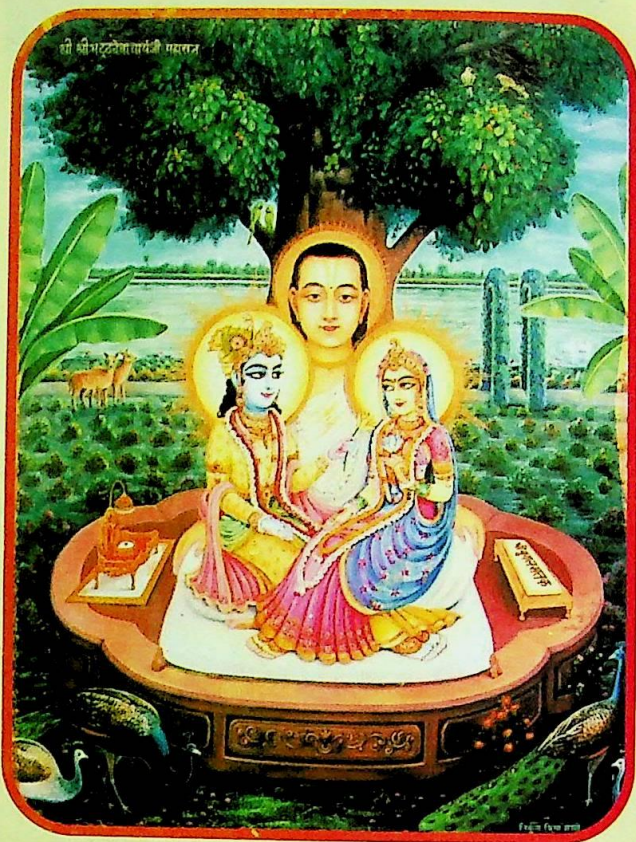
श्रीजी की बड़ी कुञ्ज

श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज
की वाणी

※ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ※

॥ श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ॥

श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज की वाणी

श्रीयुगलशतक

सम्पादक

जयकिशोरशरण

प्रकाशक

श्रीजी की बड़ी कुञ्ज

प्रेरक—
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्री "श्रीजी" महाराज
अ॰ भा॰ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ (राज॰)

●

प्रकाशक :
श्रीमती गुलकंदी बाई, पुत्र विपिन शर्मा भिंड (म॰ प्र॰)

●

प्रकाशन तिथि :
प्रकाशन तिथि : २६ अक्टूबर २०११, दीपोत्सव, वि॰ सं॰ २०६८

●

षष्ठक संस्करण :
प्रतियाँ : दो हजार प्रतियाँ

●

न्यौछावर :
१५ रूपये मात्र

●

मुद्रक :
सर्वेश्वर प्रेस
प्रताप बाजार, वृन्दावन (मथुरा)

※ पुरोवाद ※

निकुञ्ज-बिहारी श्रीश्यामा-श्याम रसिक-प्रेमी-भक्तों को महामाधुर्यमयी नित्य लीलाओं का आस्वादन कराने हेतु निज सखी-परिकर में से किसी को भी इस धरा-धाम पर भेजते हैं-

करुनानिधि श्रीनित्यकिसोरी करि अनुकंप कियो आदेस।
आईं अगवर्ति अलवेली धरि बर इच्छा विग्रह वेस।।

नित्य-विहार-रस की प्राप्ति सखी-स्वरूप आचार्य के उपदेश बिना नितान्त दुर्लभ हैं 'श्रीनारदपुराण' में स्वयं श्रीकृष्ण प्रतिज्ञा-पूर्वक कहते हैं कि श्रीराधा की कृपा बिना मेरी कृपा नहीं हो सकती है। क्योंकि किशोरीजू की कृपा से ही उनकी उन सखियों का संग प्राप्त होता है, जिनके अनुग्रह से ही सखी-स्वरूप प्राप्त होता है-

"सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेव पुनः पुनः।
बिना राधा प्रसादेनमत्प्रसादो न विद्यते।।
श्रीराधिकाया कारुण्यात् तत्सखी संगितामियात्।
तत्सखीनां च कृपया योषिदंग मवाप्नुयात्।।"

श्रीप्रियालाल की परम हितेच्छु श्रीहितुसखी की कृपामयी सुदृष्टि से साधक को सहज ही सुख की प्राप्ति हो जाती है। महावाणीकार निज गुरुरूपा के गुरुत्व का वर्णन करते हुए कहते हैं—

हितु सहचरी निज कृपा करि जासु तन चितवैं जबै।
नित्य विभव विलास को सुख सहज पावै सो तबै।।

हितुसखी के अवतार रसिकाचार्य श्री श्रीभट्टदेवजी महाराज थे, जिनका जन्म १३वीं शताब्दी मध्य मथुरा में गौड़ द्विज वंश में

हुआ। श्रीकेशवकाश्मीरीभट्टाचार्य जी मथुरा पधारे और यवनकाजी के अत्याचारों से व्रजवासियों की रक्षा करने के उपरान्त ध्रुवटीला में निवास करने लगे। तब आप उनके शिष्य हो गये। श्रीगुरुदेव के निकुञ्ज-गमन के पश्चात् श्रीनिम्बार्क-मत-परम्परा की आचार्य गद्दी को सुशोभित करने वाले आप पैंतीसवें आचार्य थे।

चौदहवीं सदी में श्री श्रीभट्टदेव ही ऐसे आचार्य हुए, जिन्होंने सर्वप्रथम संस्कृतगर्भित निगूढ़ तत्त्व सखीभाव समन्वित रसोपासना को अपनी सरस भावनाओं द्वारा ब्रजभाषा 'श्रीयुगलशतक' के रूप में अभिव्यक्त किया-**"नवल नवेली हितुसहेली, जग हित आदि गिरा प्रगटाहीं।"** (श्रीगोविंदशरणदेवाचार्य) ऐसी मान्यता है कि आपके द्वारा नित्यकेलि-रस से परिपूरित कई शतक काव्यों की रचना की गई थी। वे सभी शतक श्री गुरुवर्य के समक्ष प्रस्तुत किये गये, किन्तु कलिकाल में इस रस के अधिकारी न होने से उन्होंने सभी शतकों को श्रीयमुना में विसर्जित करा दिया। एक युगलशतक के अतिरिक्त सभी जल में विलीन हो गये। अपने उपास्य की इच्छा जान युगलशतक को उनके प्रसादरूप में सुरक्षित कर लिया गया। यह ग्रन्थ सदियों से रसिक-भक्तों का कण्ठहार बना हुआ है जिसका निम्बार्क-सम्प्रदाय ही नहीं, अपितु सभी सम्प्रदाय के प्रेमीजन नित्य पठन-मनन व गायन करते हैं।

श्रीयुगलचरणरजाकांक्षी-

जयकिशोरशरण

श्री श्रीभट्टदेवाचार्य विरचित आदिवाणी—

* अथ श्रीयुगलशतक *

श्रीसिद्धान्त-सुख

॥ आभास दोहा ॥

चरन कमल की दीजिये, सेवा सहज रसाल।
घर जायौ मुहि जानिकें, चेरौ मदन गुपाल।।

पद (इकताल, राग-गौरी)

मदनगुपाल सरन तेरी आयौ।
चरन कमल की सेवा दीजै,
चेरौ करि राषौ घर जायौ।।
धनि-धनि मात-पिता सुत बन्धू,
धनि जननी जिन गोद खिलायौ।
धनि-धनि चरन चलत तीरथ कौं,
धनि गुरु जिन हरिनाम सुनायौ।।
जे नर विमुष भये गोविंद सौं,
जनम अनेक महा दुष पायौ।
'श्रीभट' के प्रभु दियौ अभै पद,
जम डरप्यौ जब दास कहायौ॥१॥

॥ दोहा ॥

स्यामास्याम सरूप सर, परि स्वारथ विसर्यौ जु।
जाकौ मन आनन्द घन, वृन्दाविपिन हर्यौ जु।।

पद (राग-गौरी)

जाकौ मन वृन्दाविपिन हर्‌यौ।
स्यामा-स्याम सरूप सरोवर, परि स्वारथ विसर्‌यौ॥
निरषि निकुंज-पुंज छवि राधे, कृष्ण नाम उर धर्‌यौ।
जै 'श्रीभट' राधे रसिकराय, ताहि सर्वस दै निबर्‌यौ॥२॥

॥ दोहा ॥

जाकौ नामहि लेत षन, देत जुगल निज कूल।
जै-जै वृन्दाबन जु है, महानन्द कौ मूल॥

पद—

जै जै वृन्दाबन आनंद मूल।
नामलेत पावतजु प्रनैरति, जुगलकिसोर देत निजकूल॥
सरन आय पाये राधाधव, मिटी अनेक जनम की भूल।
ऐसैं जानि वृन्दाबन 'श्रीभट', रज पै वारि कोटि मषतूल॥३॥

॥ दोहा ॥

मोहनि ब्रज बन भूमि सब, मोहन सहज समाज।
मोहनि जमुना कुँज जहँ, बिहरत हैं जुबराज॥

पद-सारंग (इकताल)

मोहनि कुंज मोहन वृन्दाबन, मोहन जमुना पानी॥
मोहनि नारि सकल गोकुल की, बोलत मोहनि बानी।
'श्रीभट' के प्रभु मोहन नागर, मोहनि राधा रानी॥४॥

॥ दोहा ॥

सेव्य हमारे हैं सदा, वृन्दाबिपिन बिलास।
नंदनँदन वृषभानुजा, चरन अनन्य उपास॥

॥पद ॥

संतों, सेव्य हमारे श्रीपियप्यारे, वृन्दाबिपिन बिलासी।
नंदनँदन वृषभानुनंदनी, चरन अनन्य उपासी॥
मत्त प्रनैबस सदा एकरस, बिबिध निकुँज निवासी।
'श्रीभट' जुग बंशीवट सेवत, मूरति सब सुखरासी॥५॥

॥ दोहा ॥

आन कहैं आने न उर, हरि-गुरु सों रति होई।
सुखनिधि स्यामास्याम के, पद पावै भल सोइ॥

पद-(इकताल)

स्यामा-स्याम पद पावै सोई।
मन-बच-क्रम करि सदा निरंतर,
हरि गुरु पदपंकज रति होई॥
नंदसुवन वृषभानुसुता पद,
भजै तजै मन आनै जोई।
'श्रीभट' अटकि रहै स्वामी पन,
आन कहैं मानै सब छोई॥६॥

॥ दोहा ॥

जनम-जनम जिनके सदा, हम चाकर निसि भोर।
त्रिभुवन पोषन सुधाकर, ठाकुर जुगल किसोर।

पद—(इकताल)

जुगल किसोर हमारे ठाकुर।

सदा सर्वदा हम जिनके हैं, जनम-जनम घर जाये चाकर॥

चूक परै परिहरै न कबही, सबही भाँति दया के आकर।

जै 'श्रीभट्ट' प्रगट त्रिभुवन में, प्रनतनि पोषन परम सुधाकर॥

॥ दोहा ॥

मन सुढाल में ढरौ अरु, जिय जु परौ जसजाल।

आलस उपजौ आन सों, लालस पद जुगलाल॥

पद—(इकताल)

निसदिन लगिय रहौ यह लालस।

स्यामा-स्याम चरन की सेवा,

बिना आन सों उपजौ आलस।।

कहत सुनाय सु मनबचक्रम करि,

उरझि रहौ जिय जुगजुग जालस।

जै 'श्रीभट्ट' अघट घटना में,

ढरौ सदा मन मोर सुढालस॥८॥

॥ दोहा ॥

अनायास सहजहि जु तिहिं, पाई सुकृत सुमाल।

लग लगाय जग जिहिं जपे, मन बच राधा लाल॥

पद—(इकताल)

मन बच राधा लाल जपे जिन।

अनायास सहजहिं या जग में,

सकल सुकृत फल लाभ लह्यो तिन॥

जप तप तीरथ नेम पुन्य ब्रत,

सुभ साधन आराधन ही बिन।

जै 'श्रीभट्ट' अति उतकट जाकी,

महिमा अपरंपार अगम गिन॥९॥

॥ दोहा ॥

जहाँ जुगल मंगलमयी, करत निरन्तर बास।

सेऊँ सो सुख रूप श्री, वृन्दाबिपिन बिलास॥

सेऊँ श्रीवृन्दाविपिन विलास।

जहाँ जुगल मिलि मंगल मूरति, करत निरंतर बास॥ ॥

प्रेम-प्रवाह रसिकजन प्यारे, कबहुँ न छाँड़त पास।

कहा कहौं भागकी 'श्रीभट', राधाकृष्ण रस चास॥१०॥

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक श्रीसिद्धान्तसुख सम्पूर्णम्॥

श्रीव्रजलीला-सुख

॥ दोहा ॥

कहा करौं मन हर्‍यौ हरि, ललित बजाई भोर।
स्त्रवननि सुनि जागी अरी, या मुरली की घोर॥

पद—(राग-विभास, ताल-चम्पक)

स्त्रवननि सुनि जागी अरी, या मुरली की घोर।
कहा री करौ मन हर्‍यौ साँवरे, ललित बजाई भोर॥
रह्यौ न परै चटपटी लागी, बिन देषे (नागर) नंदकिसोर।
जै 'श्रीभट' हठ न रह्यौ नार्गरि कौ, सुरति धरी हरिओर॥११॥

॥ दोहा ॥

तनक न धीरज धरि सकै, सुनि धुनि होत अधीन।
बंसी बनसी लाल की, बेधन कौं मन-मीन॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

बंसी त्रिभंगी लाल की, मन मीन की बनसी।
कहा अंतर घर दुरि रहैं, छई मूरति घनसी॥
हरि देषे बिन क्यौं रहौं, धीरज नहिं तनसी।
जै 'श्रीभट' हरिरस बस भई, सुनि धुनि नेक भनसी॥१२॥

॥ दोहा ॥

कहि जसुमति सों छाक दै, जाऊँ चलि तिहिं ओर।
कैंसे हरि देषे बिना, राषौं री तन मोर॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

कैसें हरि देषे बिना, राषौं री तन मोर।
गोचारण गोपाल गये, लै मेरों चित चोर।।
कहि जसुमति सों छाक दै, कब कौ भयौ भोर।
जै 'श्रीभट' हरि देषन चली, जासों लागी डोर॥१३॥

॥ दोहा॥

घृत-पक बिंजन मोदक, मेवा मधुर रसाल।
हाथ जिमाऊँ पाऊँ जो, कुंजनिमें दोउ लाल।।

पद—(राग-सारंग, इकताल)

बैठे लाल कुंजनि में जो पाऊँ।
स्यामा-स्याम भाँवती जोरी, अपने हाथ जिमाऊँ॥
घृत-पक बिंजन मोदक मेवा, रुचि सों भोग लगाऊँ॥
सषिन सहित जेवैं पियप्यारी, हरषि-हरिष गुन गाऊँ॥
चंदन चरचि पुहुप की मा[illegible], निरषि हरषि पहिराऊँ।
'श्रीभट' देतपान की बीरी, जुगलचरन चित लाऊँ॥१४॥

॥ दोहा॥

मेरे मन की अघटना, के तुम जानन हार।
श्री राधे नँदनंद बलि, चरन दिषाये चारु॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

बलि-बलि श्री राधे नँदनंदना।
मेरे मन की अमित अघटना, को जानै तुम बिना॥

भलेइ चारु चरन दरसाये, ढूँडति फिरी हौं वृन्दाबना।
जै 'श्रीभट' स्यामास्याम रूप पै, निवछावरि तन मना ॥१५॥

॥ दोहा ॥

सूँघत सौरभ कमल कर, अति रति प्यारी पीय।
बैठे बनि ठनि कुंज में, मैं बलिहारी जु लीय॥

पद—(राग-सांरग, इकताल)

बैठे दोउ कुंजन में बलिहारी।
नन्दकुँवर अलबेलौ नागर, श्रीवृषभानु दुलारी॥
सूँघत सौरभ लिये कमल कर, रतिरस प्रीतम प्यारी।
जै 'श्रीभट्ट' गौरसाँवर मुष, लषि सषियाँ सब बारी ॥१६॥

॥ दोहा ॥

कुंज-महल सुष पुंज में, भोजन बिबिध रसाल।
श्रीराधा रस-बस भये, जैमत लाल गुपाल।।

पद—(राग-सारंग, तिताल)

मिलि कुंजमहल गोपाल लाल,
प्यारो (श्री) राधा रस बस जेवैं।
सहचरी सौंज रची सब बिधि सौं,
हरि नेह नयन सौं भेवैं॥
प्यारी के नैंन-निदेस लेस लषि,
मुष देषत गरसा लेवैं।
जै 'श्रीभट' भटू कटाच्छ करन सौं,
जुगल [illegible] सुधा सेवैं ॥१७॥

॥ दोहा ॥

सब्य अंग वृषभानुजा, चहुँ दिसि गोपीमाल।
जै जै कहि करि कीजियै, आरति श्रीगोपाल॥

पद—(राग–सारंग, इकताल)

जै-जै आरती श्रीगोपाल की।
आनँदकंद सकल सुख सागर, नवनागर नँदलाल की॥
सब्य अंग वृषभानुनंदनी, चहुँ दिसि गोपी-माल की।
जै 'श्रीभट' बारबार बलिहारी, राधानामनि बाल की॥१८॥

॥ दोहा ॥

रंग रँगीले गात के, संग बराती ग्वाल।
दूलह रूप अनूप है, नित बिहरत नँदलाल॥

पद—(राग–बिहागरौ, इकताल)

लषि आली नित बिहरत नँदलाल।
रंग रँगीले अँग-अँग कोमल, संग बराती ग्वाल॥
दूलह श्रीब्रजराज लाडिलौ, दुलहिन राधा बाल।
जै श्रीभट बल्लबी जुगल के, गावत गीत रसाल॥१७॥

॥ दोहा ॥

संझा गोरज उड़नि में, छबि पावत गोपाल।
श्रीभट मानौं ब्याहि कैं, घर आये नँदलाल॥

पद—(राग–गौरी, इकताल)

गोपाल लाल दूलह ग्वाल बराती।
गौवन आगे सषिन जूथ में, राधा दुलहिन लाल गवाती॥

दुंदुभि दूध दुहन की बाजी, राजी (सब) गोप सजाती।
आरतौ पलक नेहजल मोती, 'श्रीभट' रूप पिवाती ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

कनक कटोरैं डारि नग, पगे प्रेम-रस-जाल।
पै पीवत कै षेलहीं, द्यूत षेल दोउ लाल ॥

पद—(राग-केदारौ, इकताल)

पै पीवत मानौ द्यूत षेल।
बिलसत लाल-लड़ैती दोऊ,
अति अलबेली केलि की रेल ॥
स्यामा कह्यौ स्याम सौं नागर,
देषि दूध कैसौं कर मेल।
'श्रीभट' डारि कटोरै नग जब,
झपटा झपटि भई बहु झेल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

चरन चरन पर लकुट कर, धरें कच्छ तर रंग।
मुकट चटक छबि लटक लषि, बनै जु ललित त्रिभंग ॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

बनै बन ललित त्रिभंग बिहारी।
बंसी धुनि मानौ बनसी लागी, आईं गोप कुमारी ॥
अरप्यौ चारु चरन पद ऊपर, लकुट कच्छ तर धारी।
'श्रीभट' मुकुट चटक लटकनि पै, अटकि रही पियप्यारी ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

बहुत रूप धरि हरि प्रिया, मनरंजन रस हेत।
मनमथ मनमोहन मिथुन, मंडल मधि छबि देत॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

मंडल मधि बिमल जुगल भल सोहैं।
करत बिहार बिहारी प्यारी, मार कोटि मन मोहैं॥
बहुत रूप धृत सब मनरंजन, इक प्रति अँगना दोहैं।
मंडलाकार अपार बढ्यौ सुष, हरि सनमुष सबको हैं॥
सबनि मानि मन मुदित हियेमें, पिय रसरास रच्यो हैं।
दंपति अंतर सजि ग्रीवा भुज, भौंह भृकुटि थिरको है॥
नैन कैन मिलि लैन बिछेपन, बैन मैन की सैन मिलो है।
'श्रीभट' अटकि रहे जितके तित, निजनिज लगनि लगोहैं॥२३॥

॥ दोहा ॥

सब मिलि निरषत नवल छबि, गोपी मंडलाकार।
बीच जुगल सरसावहीं, अति रुचि सरद बिहार॥

पद—(राग-केदारौ, इकताल)

अति रुचि पावत सरद बिहार।
बीच जुगल सोहैं मन मोहैं, गोपी मंडलाकार॥
षडज जमावैं सरस बतावैं गावैं, सबमिलि जुगलबिहार।
'श्रीभट' नवल नागरीनागर, ताताथेइ ताथेइ करत उचार॥२४॥

॥ दोहा ॥

कीरति कूँषि कुमोदनी, सकै बास को जान।
श्रीभट भानुकुमारि कौ, [illegible] रस मान।

पद—(राग-केदारौ, इकताल)

रस बर्धन यह मान कुँवरि कौ।

कीरति कूँषि कुमोदनी जाकी,

सकै बास को जानि कुँवरि कौ॥

मधुर वस्तु ज्यौं खात निरंतर,

होत महा सुषदानि कुँवरि कौ।

बिचबिच कटुकादिक जै श्रीभट,

अति रुचिदायक भानुकुँवरि कौ॥२५॥

॥ दोहा ॥

एक समै श्रीराधिका, कृष्ण-कांति परकास।

आन तिया तट जानिकैं, मान कियौ रसरास॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

रसिकनी मान कियौ रसरास।

एक समैं पिय-तनमें अपनौ, निज प्रतिबिंब प्रकास॥

यह संभ्रम उपजायौ उर में, पर तिय कोऊ पास।

जै श्रीभट हठ हरिसों करि रहि, नागरि निपट उदास॥२६॥

॥ दोहा ॥

भामिनि तौ जु सुभाव की, कछु गति समझी हौं न।

पिय तोकौं सर्वस दियौ, कियौ मान बिधि कौन॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

मान अवसान कछू नहिं, भामिनी कैसे कीनौं।

नंदलाल गोपाल ने, तोहि सर्वस दीनौं॥

अबलौं कछु न दुरावती, कहि का रँग भीनौं।
कह्यौ 'श्रीभट' कोमल कुँवरि, सहचरि सौं मीनौं ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

भामिनि कोमल कमल से, पाँयनि चलि आयौ जु।
राधे नैंक निहारि करि, पिय कौं हिय भायौ जु॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

राधे नैंक निहारि करि, पिय कौ हिय भायौ।
प्रीतम नंदकिसोर बिनु, कौने सचुपायौ॥
भामिनि कोमल कमल से, पाँयनि चलि आयौ।
'श्रीभट' घूँघट तट लषै, बसु नेह बिकायौ ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

मन बच क्रम दुर्गम सदा, ताहिव चरन छुवात।
राधे तेरे प्रेम की, कहि आवत नहिं बात॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

राधे तेरे प्रेम की कापै कहि आवै।
तेरी-सी गोपाल की, तोपै बनि आवै॥
मन बच क्रम दुर्गम किसोर, ताहि चरन छुवावै।
'श्रीभट' मति वृषभानुजे, परताप जनावै ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

स्याम बतायौ नैंन में, रही समुझि सुकुँवारि।
चरन लग्यौ जब कह्यौ तब, हरषी लाल निहारि।।

पद—(राग-सोरठ, तिताल)

राधे नन्दनन्दन सौं नेह।

लसि रह्यौ स्याम नैंनन में तेरे, कहा करिहै दुरि गेह॥

कुँवरि कुँवर तौ चरन लागि रहे, निरषि रूप सुष देह।

जावक अंकित लषि जै 'श्रीभट', भई कुँवरि हरि प्रेह॥३०॥

॥ दोहा ॥

जड़ जुवती ज्यौं जिन करै, होइ बड़ैती बाल।

हठ तजि सजि पहिराउँगी, फूलन की उर माल॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

फूल माल उर मेलि हौं, चलि अलक लड़ैती।

जड़ जुवती ज्यौं जिन करै, इत चितै हँसैती॥

कह्यौ काहु कौ मानि है, जिन होउ बड़ैती।

'श्रीभट' अलि कल सुनि कुँवरि, हरि मिली हठैती॥३१॥

॥ दोहा ॥

हिय के हित साधे सबै, बाँधे लट आधे जु।

नैंन धरे फल आजु ही, पाये हरि राधे जु॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

नैंन धरे फल आजु ही, पायौ हरि राधे।

तिरछी चितवनि कान्ह की, परि रूप अगाधे॥

निरषि निरषि बीची झकोर, हिय के हित साधे।

'श्रीभट' लषि छबि लाड़िली, बाँधे लट आधे॥३२॥

॥ दोहा ॥

जाकौं निरखत नैंक जब, हर्‍यौ मानिनी मान।
मदन-सदन जानी जु मैं, अषियाँ स्याम सुजान॥

पद—(राग-केदारौ, इकताल)

मैं जानी जु मदन-सदन, मोहन जू की अषियाँ।
निरषत मान हर्‍यौ मानिनि कौ, हारि रहीं सब सषियाँ॥
कोइ इक चितवनि चिते कुँवरि तन, इन या मनकी लषियाँ।
'श्रीभट' अटक छुटी पट अंतर, मंदमंद हँसि मुषियाँ॥ ३३॥

॥ दोहा ॥

कुंज महल दंपति मिले, भये मनोरथ मोर।
आई सौंन मनाय हौं, निरषौं जुगल किसोर।।

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

बन्यौ नीकौ राधाकृष्ण मिलौनौं।
दंपिति कुंज महल में राजैं, मनु करि आन्यौ गौनौं॥
भये मनोरथ मेरे बांछे, आछे करि आई ही सौंनौं।
श्रीभट निरषि हरषभयौ हियमें, बिहरत लाललड़ैती दौनौं॥ ३४॥

॥ दोहा ॥

तेरी अरु इनकी जु ए, एक मती सब बात।
हौं न पत्याऊँ बहुरि हठि, अब पाई हरि घात॥

पद—(राग-बिहागरौ, इकताल)

राधे अब पाई हरि घतियाँ।
चंदलाल गोपाल की तेरी, सब बातैं इक मतियाँ॥

हरि देषे बिन छिन न रहि परै, प्रगट भई हित जतियाँ।
कहैं श्रीभट बहुरि जो हठिहौ, हौं न आनिहौं पतियाँ॥३५॥

॥ दोहा ॥

रसिकराज ब्रजराज सुत, अति अलबेलौ लाल।
दानकेलि मिस रस चषत, श्रीभट श्रीगोपाल॥

पद–(राग–बिलावल, इकताल)

रसिक सिरोमनि लाडिलौ, माँगै गोरस बाँह पसार री।
लाल लकुट आड़ी दिये प्यारौ, करिकरि बहु लड़कार री॥
तर ऊपर नषसिष अवलोकत, करत बहुत परकार री।
कहें 'श्रीभट' नटवर रस लंपट, प्रिया तन हाथ न डार री॥

।। इति श्रीआदिवाणी युगलशतक श्रीब्रजलीला–सुख सम्पूर्णम्।।

श्रीसेवा-सुख

॥ दोहा ॥

मेरेइ आँगन सेज पै, अरस-परस सुकुँवार।
करत सहज सुष सौं सने, स्यामा-स्याम बिहार॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

स्यामा-स्याम सेज उठि बैठे,
अरस-परस दोउ करत सिंगार।
उन पहिरी वाकी मोतिन माला,
उन पहर्‌यौ वाकौ नवसर हार॥
लटपटे पेंच सँवारति स्यामा,
अलक सँवारत नंदकुमार।
'श्रीभट' जुगलकिसोर की जोरी,
मेरेइ आँगन करत बिहार॥ ३७॥

॥ दोहा ॥

षिसि षिसि सिर तैं परत पट, ससि वदनी जुव जाल।
उठत भोर संग लाल के, कसति कंचुकी बाल॥

पद—(राग-विभास, ताल-चम्पक)

उठत भोर लालजू के सँग तैं,
कुंचुकि कसति राधिका प्यारी।
षिसि षिसि परत नीलपट सिर तैं,
ससि वदनी नव जौबन वारी॥

मनभावती लाल गिरिधर (जू) की,
रची विधाता सुहथ सँवारी।
जै 'श्रीभट्ट' सुरत-रँग भीने,
लषे प्रिया जुत कुंजबिहारी॥३८॥

॥ दोहा ॥

निरषि हिताई दुहुँन की, हाव भाव हिय धारि।
सजि आरति वारति सबै, प्रात मुदित सहचारि॥

पद—(राग-बिलावल, इकताल)

प्रातमुदित मिलि मंगल गावैं, लाललड़ैती कौं सखी लड़ावैं।
रहसि जु केलि कही हिय भाई, राधामाधव अधिक हिताई।
प्रेम संभ्रम के वचन सुनावैं, सुन्दरि हरि मुष दरसन पावैं॥
बाल विसाल कमलदल नैंनी, स्यामा-स्याम परमसुष दैनी।
जै जै सुर कहि ताल बजावैं, गीत वाद्य सौं चाल मिलावैं॥
हिय में हावभाव लिये थारा, रति घृत जोतिरु बाति बिहारा।
तनमन मुक्ता चौक पुरावैं, आरति श्रीभट अमिट प्रचावैं॥३९॥

॥ दोहा ॥

करन आरती मनिमई, अधिकई बनिक बिधान।
वारि निहारौं नैंन भरि, मुष धरि मेवा पान॥

पद—(राग-बिंहागरौ, इकताल)

मंगल कनक आरती मनिमय, गौरस्याम छबिऊपर वारौं।
दोऊ बने नागरी नागर, कौन-कौन की ओर निहारौं॥

षंजन मीन चपल साराँग से, मोहन नैंन देषि हौं वारौं।
मेवा पान षवाय जै श्रीभट, करि दंडौत चँवर लै ढारौं॥४०॥

॥ दोहा॥

बिनै करत पाऊँ जु मैं, नाऊँ चरननि माथ।
देह धरे कौ यहै फल, हितू जिमाऊँ हाथ॥

पद—(राग–पञ्चम, ताल–चम्पक)

मिलि भोजन स्यामास्याम करत,
कर गरसा हँसत रस बतियाँ करैं।
पीय कहत हितु हाथ जिमाऊँ,
इतनोहुँ फल पाऊँ देह धरैं॥
करत बिनै नैंननि सों मोहन,
आनन–सुधा कर–परस डरैं।
'श्रीभट' नेह की घटी अटपटी,
सैन बैन सों पैयाँ परैं॥४१॥

॥ दोहा॥

छपन छत्तीसों रस–छहौं, चतुर बिधा बहु पुंज।
नंदनँदन वृषभानुजा, भोजन करत निकुंज॥

पद—(राग–सारंग, इकताल)

भोजन करत निकुंज विहारी।
नंदनँदन वृषाभानुनंदनी, जग बंदन सुषकारी॥
पाँय धुवाय बिछौने लौने, पिय प्यारी बैठारी।
आय धरे सुथरे जुग आगर, चारु थार भरि झारी॥

लगिय जु सहचरि सामां पुरसन, चुरसन रस बिस्तारी।
भष्यरु भोज्य लेह्य अरु चोष्य, चतुरबिध सनिधि सुधारी॥
भात बहुत भाँतिन बिंजन गन, आनि धरे परसारी।
ओदन महामोदन परसी, सरसी फुलका ललकारी॥
घी गायौ तायौ ततकाली, बेली धरयौ नितारी।
दै घृत डोरा बूरा परसी, हरषी परसन हारी॥
तरकन मरकन जीरा पीरा, परम वासना कारी।
अद्रक अनेक प्रकार दार में, आमी निंबु चुसारी॥
कढ़ी पकौरी मूंग मुंगोरी, किये निमौंना न्यारी।
भाजी साजी केंती मेथी, चना लुना चौरारी॥
मिरचि चरचि कुलथी बथुआ, अथवा सब साग सँवारी।
सैंजन फली कली कचनारी, सैंगरि स्वाद खरारी॥
अरई तुरई केला करैला, कटहर बड़हर ग्वारी।
प्रतिकाली कुंभलरु कचालू, नवला रस चँवलारी॥
बागन बन के सबै बनाये, जितेक बिंजन कारी।
रंग रँगे जेवैं जबही तब, रीझि रहे पिय प्यारी॥
रामचकर सिखरन करपूरन, छनिषट मठा धुँगारी।
थुलिया मिलन मिले जा संगा, अंगा खोभ खुभारी॥
बहुरि दुपरती गरती घी की, नीकी पाक निकारी।
मैदा पूप अनूप गुलगुला, नवला अन्न प्रचारी॥
पुरी कचौरी खीर सुसीरा, थर मिस्त्री ककरारी।
मोहन भोग मनोहर गुटका, अटका दूध दुधारी॥

चक्का फैनी रुचनी माखन, सक्करपार सुहारी।
लडुआ मुठिया अँदरसा खाजे, गूँझे मगद कसारी॥
सेव उपरेठा पेठा पापर, वर चटनी रुचिकारी।
गुना पचन सब बचन कटाछिन, बेसन चारु बड़ारी॥
तर तूँबा ते किते रायते, पते बहुत परकारी।
काँजी साजी सुन्दर फिरि फिरि, पावैं भावैं भारी॥
पेरा सेव जलेबी खुरमा, मोतीचूर गुँजारी।
खुहा फुलौरे कंद गिंदौरे, नुकती रवा रुचारी॥
रामचने आचार अंबिया, कैर निंबू लहसारी।
घिरमिर मुरबा अँवरा पचनी, रस दमनी अमलारी॥
सरबत छना पना अनबानी, मिरचि बनी सुपखारी।
भोजन छपन छत्तीसों बिंजन, सबै सजे त्यौंनारी॥
हठि हरिप्यारी हारि रहे तब, बनि आई ज्यौंनारी।
(जै) 'श्रीभट' झटपट खरिका दीनें, अचवन पान-सुपारी॥
जो जन गावैं जुगल [illegible], आगैं यह ज्यौंनार।
कृपा करैं दोउ लाडिले, यहै सत्य निरधार॥४२॥

॥ दोहा ॥

हँसत जात जललेत मुष, रसरति वितरत ख्याल।
गहि झारी कर आचमन, करत लाड़िली लाल॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

अँचवन करत लाड़िली लाल।
कंचन झारी गहत परस्पर, श्रीराधा गोपाल।

जलमुष लेतहि हँसत हँसावत, देषत सषिनके जाल।
(श्री) राधामाधव षेलत रतभये, श्रीभट परत विचाल ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

लै कर बीरी पिय प्रिया, वदन मनोहर देत।
लेत नाहिं जब लाडिली, बिनै करत सुष हेत ॥

पद—(राग–सारंग, इकताल)

प्यारीजू कौं बीरी षवावत मोहना।
सुन्दर मुष सुष देख्यौ चाहत, नंदनँदन पिय सोहना ॥
जदपि न लेत लड़ैती कर तैं, बिनै करत परि गोहना।
'श्रीभट' निपट दीनतन देख्यौ, मुसकि दियौ मुष टोहना ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

सरद रैन गिरि नील मनु, घन चपला सनमान।
अपने श्री गोपाल कौं, प्रिया खवावति पान ॥

पद—(राग–सारंग, इकताल)

गोपालजू कौं पान षवावति भामिनी।
परम प्रिया गुन रूप अगाधा, श्रीराधा निज नामिनी।
कर अँकमाल पीकमुष लसहीं, विलसहीं ज्यौं घनदामिनी
जै 'श्रीभट्ट' कूट मरकत तट, षिली सरद मनु जामिनी ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

गौर स्याम अति सोहनी, जोरी परम उदार।
अलिजन आरति करत हैं, छबिहिं निहार निहार ॥

पद—(राग-सारंग, इकताल)

आरति करत अली छबि निरषैं।
नवलकिसोर जोरि सुख बरषैं॥
प्यारी मुष लसि ससि षंडित सुष।
कान्हर सिर सिषंड मंडित मुष॥
कुंडल जुगल कपोलनि राजैं।
मुष-सुषमा अति ईछन आजैं॥
सीपज सिरज उज्जल कल केलैं।
नील पीतपट घन रुचि पेलैं॥
गौर-स्याम मूरति रस रंजैं।
बाहु बिसाल ब्याल उर गंजैं॥
नंद सुवन वृषभानु की तनया।
'श्रीभट' जोट अघट सुठि बनया॥४६॥

॥ दोहा ॥

मधिदिन कमलन दलनि सौं, रची सैन निज हाथ।
लताभवन प्रिया-रवन सँग, बिलसत दोऊ साथ॥

पद-(राग-सारंग, चौताल)

लताभवन प्रियारवन संग, मिलि बिलसति रुचि सौं चैन।
मधिदिन फूले कमल-दलनि सौं, रचि निज सुकरनि सैन॥
सघन विपिन जु ऐन आनँदकौ, देषि परत नहिं गैन।
'श्रीभट' देषि-देषि दोउन तन, सुफल करत हौं नैन॥४७॥

॥ दोहा ॥

मिस्त्री फोरी कबहि ते, रही बाट बहु हेरि।
ब्यारू की बलि बेर अहु, कीजै नाहिं अबेर॥

पद-(राग-केदारौ, ताल-चम्पक)

ब्यारूकी बेर अबेर न कीजै, लीजै बलिजाऊँ थर थोरी।
कब की बाट देषि नँदनंदन, मैं तबही तैं मिस्त्री फोरी॥
हठ न करौ बैठौ चौकी पै, संग लियै राधा गोरी।
(जै) 'श्रीभट' जुटिबैठे दोऊतन, देखि जिवैं जुगजीवौ जोरी॥४८॥

॥ दोहा॥

न्यारी धेनु दुहायकैं, ल्याई तट औटाय।
नटौ न बलि पीवो दोऊ, दूधहिं मधुरे भाय॥

पद-(राग-केदारौ, इकताल)

पीवौ दोउ दूध मधुरे भाय।
अधिक औट्यौ तट नटौ ना, मेवा मिस्त्री मिलाय॥
कनक जटित सुमन कटोरै, न्यारी धेनु दुहाय।
बेगि पीवौ बलि कान्ह किसोरी, बहुरि जैहै सिराय॥
थार थर धरि ब्यारू समये, रस रमै रुचि पाय।
बेला लै लै पीवै पिवावैं, हँसैं हँसावैं बुलाय॥
पयहि पीवत हितू कुतूहल, बाढ्यौ बिलँब लगाय।
लेहु बीरी कमल लोचन, जै 'श्रीभट' बलि जाय॥४९॥

॥ दोहा॥

ढारौं निज कर चँवर लै, धारौं नैंननि नेह।
सोवत जुगलकिसोर जहँ, सेऊँ चरन सुदेह॥

पद-(राग-बिलावल, इकलात)

सोवत जुगल चँवर हौं ढारौं।
कबहुँक सेऊँ चरन नैंननि मों, नौतन नेह सुधारस धारौं।

कबहुँक पद पल्लव राधेके, अपने नैंन कनीन निसारौं।
कबहुँक 'श्रीभट' नंदलालके, कोमल चरनकमल पुचकारौं ॥५०॥

॥ दोहा ॥

सोभा निधि सुष सिद्धि रिधि, राधाधव कौ धाम।
जहँ हितु हित सज्या सजी, श्रीभट निजकर स्याम ॥

पद-(इकलात)

निज कर अपने स्याम सँवारी।
सुषदसेज राधाधव मंदिर, सोभानिधि रिधि सिद्धि महारी॥
हितुके हेत हरषि सुंदरवर, अतिहि अनूप रची रुचिकारी।
जै 'श्रीभट्ट' करत परिचर्जा, रिझवन प्रान बल्लभा प्यारी ॥५१॥

॥ दोहा ॥

मेरे मन के सुफल सब, भये मनोरथ पुंज।
दुरि देषौं पौढ़े दोऊ, मंगल महल निकुंज॥

पद-(राग-बिहागरौ, इकताल)

कुंजमहल आज मंगल होरी।
किसलैदल कुसुमनि की सज्या, तापै बिछई पीत पिछौरी।
भये मनोरथ मेरे मन के, सजि दंपति पौढ़े इक ठौरी।
नैंन ओट ह्वै 'श्रीभट' देषत, क्रिड़ा करत किसोरकिसोरी ॥५२॥

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक श्री सेवा-सुख सम्पूर्णम् ॥

श्रीसहज-सुख

॥ दोहा ॥

अंग-अंग दुति माधुरी, बिबि मुष चंद चकोर।
श्रीभट सुघट दृष्टिन अटक, नटवर नवलकिसोर॥

पद-(राग-रामकली, इकताल)

बसौ मेरे नैंनन में दोउ चंद।
गौर बरन वृषभानुनंदिनी, स्याम बरन नँदनंद॥
गोलक रहे लुभाय रूप में, निरषत आनँद कंद।
जै 'श्रीभट्ट' प्रेम रस बंधन, क्यों छूटै दृढ़ फंद॥५३॥

॥ दोहा ॥

जोरी गोरी स्याम कोउ, थोरी रचि न बनाय।
प्रतिबिंबित तन परस्पर, श्रीभट उलटि लषाय॥

पद-(राग-केदारौ, इकताल)

राधा माधव राजैं धाम।
अरस परस ऐसैं प्रतिबिंबित,
स्याम स्यामा मानौ स्यामा स्याम॥
चकित चच्छु निजछबि अवलोकत,
गौर स्याम मिलि भइ अरुनाई।
जैसे मुष आये दरपन तट,
तुरतहि तिहि छिन रँग पलटाई॥
अंगनि अंग अभंग रही छबि,
छाय समीप भयौ जो जाकी।

जै 'श्रीभट्ट' निकट निरषत दुति,
नंदनँदन वृषभानुसुता की ॥५४॥

॥ दोहा ॥

प्रेस कला सुर सहित पिय, कहत प्रिया सौं बैन।
हार उदार निहार उर, चहत चतुर चित लैंन॥

पद-(राग-गौरी, इकताल)

परस्पर निरषि थकित भये नैन।
प्रेम कला भरि सुर राधे सौं, बोलत अमृत बैन॥
हार उदार निहार तिहारौ, राधे यह मन लैन।
श्रीभट लटक जानि हितकारिनि, भई स्याम सुषदैन॥५५॥

॥ दोहा ॥

सुमन सहित आवृत अमल, जामधि निज प्रतिबिंब।
देषि दिषावत जमुन तट, अति उत्कट अविलंब॥

पद-(राग-गौरी, तिताल)

मंजु कुंज द्वारैं प्रिया प्रीतम,
मिलि बैठे जमुना के तीर।
गहवर कुसुम तरंग संग सौं,
सीतल मंद सुगंध समीर॥
सुमन सहित चक्राकृत आवृत,
अद्भुत देषि दिषावत नीर।
'श्रीभट' अति उत्कट तट राजैं,
स्यामास्याम छबि जलधि गँभीर॥५६॥

॥ दोहा ॥

सुकर मुकुर निरषत दोऊ, मुष ससि नैंन चकोर।
गौर-स्याम अभिराम अति, छबि न फबी कछु थोर॥

पद-(राग-कान्हरो, तिताल)

गौर-स्याम अभिराम बिराजैं।
अति उमंग अँग अंग भरे रँग,
सुकर मुकुर निरषत नहिं त्याजैं॥
गंड सों गंड बाहु ग्रीवा मिलि,
प्रतिबिंबित तन उपमा लाजैं।
नैंन चकोर बिलोकि बदन ससि,
आनँद सिन्धु मगन भये भ्राजैं॥
नील निचौल पीत पट कैं तट,
मोहन मुकट मनोहर राजैं।
घटा छटा आषंडल कोदँड,
दोउ तन एक देस छबि छाजैं॥
गावत सहित मिलत गति प्यारी,
मोहन मुष मुरली सुर बाजैं।
'श्रीभट' अटकि परे दंपति दृग,
मूरति मनहुँ एक ही साजैं॥५७॥

॥ दोहा ॥

भुवन चतुर्दस की सबै, सुन्दरता सिरमौर।
सुन्दर वर जोरी बनी, वृन्दावन निज ठौर॥

पद-(राग-केदारौ, तिताल)

वृन्दावन इक सुन्दर जोरी।
षेलत जहाँ तहाँ बंसीवट, नंदनँदन वृषभानु किसोरी॥
भुवन चतुर्दस की सुन्दरता, सुन्दर स्याम राधिका गोरी।
जै 'श्रीभट' कहाँ लौं बरनौं, रसना एक नाहिं लष कोरी॥

॥ दोहा ॥

नषसिष सुषमा के दोउ, रतनागर रसिकेस।
अद्भुत राधामाधवी, जोरी सहज सुदेस॥

पद-(राग-केदारौ, तिताल)

राधा-माधव अद्भुत जोरी।
सदा सनातन इक रस बिहरत,
अविचल नवल किसोर-किसोरी॥
नष सिष सब सुषमा रतनागर,
भरत रसिकवर हृदय सरोरी।
जै 'श्रीभट्ट' कटक कर कुंडल,
गंड वलय मिलि लसत हिलोरी॥५९॥

॥ दोहा ॥

दरपन में प्रतिबिंब ज्यौं, नैंन जु नैंनन माहिं।
यों प्यारी पिय पलक हू, न्यारे नहिं दरसाहिं॥

पद- (राग-केदारौ, इकताल)

प्यारी तन स्याम स्यामा तन प्यारौ।
प्रतिबिंबित तन अरस परस दोउ,
एक पलक दिषियत नहिं न्यारौ॥

ज्यौं दरपन में नैंन नैंन में,
नैंन सहित दरपन दिषवारौ।
'श्रीभट' जोट की अतिछबि ऊपर,
तन मन धन न्यौछावरि डारौ ॥६०॥

॥ दोहा ॥

वृन्दावन फुलवारि में, पहरि फूल उरमाल।
बिहरत श्रीवृषभानुजा नंदनँदन गोपाल॥

पद-(राग-बिलावल, तिताल)

नंदनँदन गोपाललाल वृषभानु दुलारी।
विहरत वृन्दाबिपिन में, अति प्रीतम प्यारी॥
कर सपरस परसन्न होत, तैसिय फुलवारी।
'श्रीभट' स्त्रग दीनी सँवारि, हरि प्रिया उर धारी ॥६१॥

॥ दोहा ॥

चंचल चिकने लगौ हैं, अरुन वरन रस अैन।
अनियारे अति नागरी, नागर के ए नैंन॥

पद-(राग-काफी, तिताल)

नागरी नागर के नैंन अनियारे।
अति अनूप निज रूप निहारे,
परम प्रान प्रिय प्रीतम प्यारे॥
भृकुटि मरोरनि गूढ़ भाव सौं,
डोरा कोर प्रेम फँदवारे।
अरुन बरन पैने रस भीने,
चिकने लगोहैं प्रीति पन पारे॥

पलक ललक मानौ अलिन नलिन पै,
प्रात मुदित हित पंख पसारे।
अंजन अमिल रेष ईषद लसि,
बसि नागिनि मनु खंजन गारे॥
चंचल कमल ललित प्रफुलित मनु,
भूतल गति निरषत रस भारे।
'श्रीभट' सुरत समर में कोविद,
सुभट कोटि कंद्रप इहाँ हारे॥६२॥

॥ दोहा ॥

लोचन स्याम सुधीर के, मोचन विरह विसाल।
बिन ही अंजन ये अहो, खंजन लोचन बाल॥

पद-(राग-चर्चरी, तिताल)

लड़ैतीजी के खंजन लोचना।
बिनहीं अंजन दिये बिहारी, बिरह विथा उर मोचना।।
चपल चाल लालै अवलोकत, रूप लुभाय संकोचना।
'श्रीभट' सुघर सुधीर स्याम कौ, करत निरंतर रोचना॥६३॥

॥ दोहा ॥

रसबस ह्वै सरबस दियौ, लषि पिय स्याम सुजान।
अंजन षंजन नैंन मनु, धरे कटारे सान॥

पद-(राग-बिलावल, तिताल)

अंजन षंजन नैंन में, लषि नंद दुलारे।
राधे रस बस साँवरे, सरबस दियौ प्यारे॥

मैन सैन रन करन कों, सान धरे कटारे।
'श्रीभट' स्याम सुखदैन कों, स्यामा सचि धारे॥६४॥

॥ दोहा ॥

राधे तेरे रूप की, पटतर कहिये काहि।
सरबस तजि रसबस भये, नैंन कोर तन चाहि॥

पद-(राग-रायसो, ताल-चम्मक)

नैंक नैंन की कोर मोरि, मोहन बस कीनें।
राधे तेरे रूप की, पटतर को दीनें॥
कमल कोस अलि ज्यौं, चलैं तारे रँग भीनें।
'श्रीभट' तन अंजन छुवै, लालन लवलीनें।।६५।।

॥ दोहा ॥

जित-जित भामिनि पग धरै, तित-तित भावत लाल।
करत पलक निज पाँवड़े, रूप विमोहित बाल॥

पद-(राग-बिलावल, इकताल)

प्यारीजू के प्यारौ रूप विमोहित।
करत पलक पाँवड़े बिहारी, धरत चरन भामिनी जित॥
यहै प्रीति परतीति निरंतर, दियौ वारि सब चितबित
जै 'श्रीभट्ट' प्रेमबस प्रीतम, निसिबासर जानै कित।।६६।

॥ दोहा ॥

साँवर ससि सँग लसि प्रिया, भरी सरस रस छंद।
डोलत हैं श्रीराधिका, अति ही आजु आनंद॥

पद-(राग-केदारौ, ताल-यात्रा)

श्रीराधिका आजु आनंद में डोलै।

साँवरे चंद गोबिंद के रस भरी,

दूसरी कोकिला मधुर सुर बोलै॥

पहरि पट नीलवर कनक हीरावली,

हाथ लिये आरसी रूप तोलै।

कहैं 'श्रीभट्ट' आजु नागरि नीकीबनी,

कृष्ण के सील की ग्रन्थि खोलै॥६७॥

॥ दोहा ॥

प्रीति रीति रस बस भये, जदपि मनोहर मैन।

तदपि रटैं निज मुष सदा, श्रीराधे राधे बैन॥

पद-(राग-केदारौ, ताल-चम्पक)

मोहन राधे राधे बैन बोलैं।

प्रीति रीति रस बस नागरि, हरि लियौ प्रेम के मोलैं॥

हास विलास रास राधे सँग, सील आपनौ तोलैं।

'श्रीभट' जदपि मदनमोहन तउ, हारिहारि सिर डोलैं॥६८॥

॥ दोहा ॥

गहि मुरली गोपाल की, लीनी प्रिया प्रवीन।

अटके ऐंचत परसपर, हरि बहु करत अधीन॥

पद-(राग-रायसो, ताल-चम्पक)

मुरली श्रीगोपाल की, ललना गहि लीनी।

मंजु जुगल अँजुलीन की, पंगति दुति दीनी॥

नील मनिन कंचन खचित, रंजित मनु कीनी।

'श्रीभट' ऐंचत परसपर, हरि करत अधीनी॥६९॥

॥ दोहा ॥

चकित नैन लषि बैन भये, व्याकुल अति ही स्याम।
हँसी सषी की ओट ह्वै, स्यामा सब सुष धाम॥

पद-(राग-कान्हरौ, तिताल)

स्यामा मदनमोहन की हरिलई बंसी।
चकित नैन बैन व्याकुल लषि, सषी ओट दै हंसी॥
इक सषी नैन सैन समुझाये, प्यारी परम प्रसंसी।
'श्रीभट' मुकट लटक चरननि तट, करत हैं रसिकवतंसी॥७०॥

॥ दोहा ॥

बिन दामन लियो मोल हौं, करहु जो भावै सोहि।
अहो राधे बिनती करौं, मुरली दीजै मोहि॥

पद-(राग-केदारौ, इकताल)

राधे बिनै करत मोहि मुरली दीजै।
बिनु दामन मनु मोल लियो हौं, जो भावै सो कीजै॥
सैन पान सब सुधि बिसराई, इतनी करुना लिजै।
'श्रीभट' सुघर किसोरकिसोरी, अरस-परस रँगभीजै॥७१॥

॥ दोहा ॥

कुहुकालस जुत लाल के, ललिता भृकुटि चलाय।
दये बताय जब लाडिली, दई माल मन भाय॥

पद-(राग-केदारौ, तिताल)

कुहुकालस जुत मदन गोपाल।
वृन्दावन नव कुंज सदन में,
बिहरत मन रंजन नँदलाल॥

भृकुटि चलाय बतायो ललिता,
देषि दई दयिता उर माल।
'श्रीभट' संपुट करि हरि नाचे,
मुदित किहुँ न लोचन जु बिसाल॥७२॥

॥ दोहा ॥

कुँवरि किसोरी नागरी, मोहि दीजै निज हार।
तुम करि औरै लीजियै, बहु फूली फुलवार॥

पद-(राग-बिहागरौ, इकताल)

बहु फूली फुलवारि यें दीजै निज हार।
उरझ्यौ मोतिन माल में, हौं लेऊँ सुरझार॥
कुँवरि किसोरी नागरी, सखी और सँवार।
'श्रीभट' निपट लटू लष्यौ, कहि लेहु उतार॥७३॥

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक श्रीसहज-सुख सम्पूर्णम्॥

श्रीसुरत-सुख

॥ दोहा ॥

उझकति सहचरि निरषि सुष, हिय में भरी हुलास।
नव निकुंज रस पुंज छबि, स्यामा स्याम निवास॥

पद-(राग-बिहागरौ, इकताल)

नव निकुंजमें पुंज सषिन के, तिनमें स्यामास्याम विराजैं।
सीतल मंद सुगंध त्रिबिध, मारुत सेवत रितुराजैं॥
उझकति जिततित लता सुषिर सषि, हिये हुलासी साजैं।
अंतर रह्यौ न दंपति 'श्रीभट', देषि भये सब काजैं॥७४॥

॥ दोहा ॥

बहु भतियाँ फूल्यौ विपिन, रतियाँ सरद सुहात।
बतियाँ भाँवति करत उर, छतियाँ अंक लिषात॥

पद-(राग-बिहागरौ, ताल-चम्क)

दोउ मिलि करत भाँवती बतियाँ।
मदन गोपाल कुँवरि राधे के,
नषमनि अंक लिषत उर छतियाँ॥
तैसिय छिटकि रही उजियारी,
पूरन चंद सरद की रतियाँ।
केलि रूपिनी जमुना श्रीभट,
वृन्दावन फूल्यौ बहु भतियाँ॥७५॥

॥ दोहा ॥

कबहुँक लै निज करनि में, लावत नैंन विसाल।
प्रान प्रिया मन हरनि के, चरन पलोटत लाल॥

पद-(राग-बिहागरौ, इकताल)

प्यारीजू के चरन पलोटत मोहन।
नीलकमल के दलन लपेटे, अरुन कमलदल सोहन॥
कबहुंक लैलै नैंन लगावत, अलि धावत ज्यौं गोहन।
जै 'श्रीभट्ट' छबीली राधे, होत जगे ते छोहन॥७६॥

॥ दोहा ॥

प्यारी प्रीतम परस्पर, रच्यौ रंग अनुराग।
अधर सुधा रस देत हैं, लेत स्याम बड़भाग॥

पद-(राग-बिहागरौ, इकताल)

श्रीवृन्दाविपिनेस्वरी, रससिन्धु बिहारी।
रच्यौ परस्पर प्रेम छेम, बाढ्यौ अति भारी॥
अरप्यौ पिय हिय पाय कैं, निज अधर सुधारी।
'श्रीभट' बड़भागी गोपाल, पीयौ रुचिकारी॥७७॥

॥ दोहा ॥

हित बावरि नित कुंज में, राधामाधव केलि।
श्रीभट निपट हितकारिनी, हरषि निरषि रसरेलि॥

पद-(राग-बिहागरौ, तिताल)

रस की रेलि वेलि अति बाढ़ी।
दंपति की हित बावरि विहरनि,
रहौ सदा मेरे चित चाढ़ी॥

निरषत रहौं निपट हितकारिनि,
पियप्यारी की गुन गति गाढ़ी।
जै 'श्रीभट' उत्कट संघट सुष,
केलि सहेलि निरंतर ठाढ़ी ॥७८॥

॥ दोहा ॥

बाल बाहु वर लाल की, किय किन्दुक हिय हेत।
घन स्यामल के हेत मनु, दामिनि सी छबि देत॥

पद-(राग-केदारौ, तिताल)

कीनें सचु स्यामा-स्याम सैंन।
ऐसे लसैं अंग राग कोविद, वदत ईषद बैंन॥
बाल लाल वर बाहु किंदुक, कियें दिये हिय हेत।
स्याम घन तन दामिनी बनि, भामिनी छबि देत॥
गोबिन्द दयिता सुरत सज्जित, श्रीभट पट संभीर।
प्रिया फबि मनु कोर ससिकी, दबी घनगंभीर॥७९॥

॥ दोहा ॥

दोउन दृग मृगराज ज्यों, गति मति रहे भूल।
श्रीभट वरवट ह्वै लटू, निरषत आनँद मूल॥

पद-(राग-मरू, इकताल)

प्रिया मुष सुषमा देषि कें, मोहे कुंज बिहारी।
अधर मधुर पर पीक लीक सी, कसी सुधारी॥
प्रनय कोप दृग रौपिकैं, कोर सों निहारी।
जै 'श्रीभट' [illegible] देषिकैं, जाऊँ बलिहारी॥८०॥

अहु राधे वृषभानु की, कुँवरि किसोरी बाल।
थोरी वै भोरीहि में, मोहे मोहन लाल॥

पद–(राग–बिहागरौ, इकताल)

जै जै श्रीवृषभानु किसोरी।
राजत रसिक अंक अंकित सी, लसी स्याम संग गोरी॥
जै जै राधे रूप अगाधे, चितै चारु चित चोरी।
'श्रीभट' नटवर रूप सुंदरवर, मोहे तैं थोरी वै भोरी॥८१॥

॥ इति श्रीआदिवाणी युगलशतक श्रीसुरत-सुख सम्पूर्णम्॥

श्रीउत्सव-सुख

वसन्त- ॥ दोहा ॥

मंगल विमली सबहि मिलि, षेलौ हिय हुलसन्त।
मान विरह दुष मेटनौं, आयौ रितुराज बसन्त॥

पद-(राग-वसंत, इकताल)

आयौ रितुराज बसंत हित भयौ हिय कौ।
अबमिलि मंगलबिमली षेलौ, मान बिरह गयौ जियकौ॥
चितमें चाह उछाव बढ़ावौ, सहज संग भयौ पिय कौ।
'श्रीभट' कूट कोप करि नागरि, दीप जरायौ घियकौ॥८२॥

॥ दोहा ॥

हरष्यौ सुत व्रजराज कौ, निरषि बसंत रितुराज।
श्रीभट अटक कछू नहीं, करि हैं मन के काज॥

पद-(राग-वसंत, इकताल)

आज मन कारज करिये री।
हरष्यौ सुत व्रजपति कौ अति ही, लषि चषि ढरिये री॥
रितु कौ राज बसंत निरषि, सोइ सुष उर धरिये री
'श्रीभट' अटक नहीं अब तनकहु, महामुदित भरिये री॥८३।

॥ दोहा ॥

नव किसोर नव नागरी, नव सब सौंजरु साज।
नव वृन्दावन नव कुसुम, नव बसंत रितुराज॥

पद-(राग-वसंत, इकताल)

नवल बसंत नवल श्रीवृन्दावन, नवलहि फूले फूल।
नवलहि कान्ह नवल सब गोपी, निरतत एकै तूल॥
नवलहि साषि जवादि कुंकुमा, नवलहि बसन अमूल।
नवलहि छींट बनी केसर की, मेंटत मनमथ सूल॥
नवल गुलाल उड़ै रंग बूका, नवल पवन कै झूल।
नवलहि बाजे बाजत 'श्रीभट' कालिन्दी कै कूल॥८४॥

होरी-

॥दोहा॥

विबिध भाँति सबसौंज सजि, सुषद सरोवर रूप।
हो हो होरी षेलहीं, स्यामा-स्याम अनूप॥

पद-(राग-होरी, इकताल)

हो हो होरी षेलैं स्यामा-स्याम।
सषी रूप सरोवर गुन के ग्राम॥
जहँ आईकुंवरि चलि अलिलै पुंज।
तहँ आय मिले मोहन निकुंज॥
राधे भुजा पसारि गुलाल मेलि।
बनि घन समेत मनो तडित केलि॥
रंग ढोरि कमोरी झमकि झिंब।
नीलाम्बर मानौ चपला बिंब॥
भरि चरच्यौ रँग गोकुल सुचंद।
करभनि सुकेलि मनु मद गयंद॥
रंग भीजि चीर लगे अंग-अंग।
लषि नंदनँदन मन भयौ पंग॥

वृषभानु कुँवरि डार्‌यौ अबीर।
मरकत मनि मानौ सिंच्यौ छीर॥
नव रंग बूका उड्यौ गुलाल।
वय संधि जलद मनौ चंदमाल॥
गारी गावैं गोपी पीयूष बैन।
सोइ सुनत स्यामजूके हियमें चैन॥
पिचकारी भरि रंग राधे ओर।
छवि पर वारौं परजन्य कोर।।
सौरभ सुगंध केसर के नीर।
आनन्द कन्द मलय समीर॥
बनमालि वल्लबिनु गहे आय।
मनु कोटि तडित घन लपटि जाय॥
सषि लेहु री याकौं भले नचाय।
फिर नाहिन पाय है ऐसौ दाय।।
ढोरि कमोरि स्यामादई सिषाय।
मुष लेपन करि दिये छुड़ाय।।
सब हँसीं लसीं कर देय ताल।
कहि ऊँचे सुर हारे गुपाल॥
हरि बीच नच्यौ मच्यौ कीच रंग।
सरसै ज्यौं मेघ पै सोम संग॥
मिलि चंद्रमुषिन तोषे हरि चकोर।
दिवि कनक मोरनि मधि मनहु मोर॥

रँग डारि गारि दै भजे जु भाल।
सु समान समर जैसे परत चाल॥
फिर लई गुपाल पिचकारी हाथ।
घनतेव निकसि ज्यौं तडित जात॥
वन भ्रमत भ्रमर ब्रजराजलाल।
फूलीं कुमुदनी मानौ गोप बाल॥
बहु बूका उड्यौ रंग अंध ऊथ।
तहँ अटक्यौ गोपियन कौ जूथ॥
फिरि फिरि गोपाल गुलाल पेलि।
करि लयौ बराबरि बहुरि षेलि॥
ब्रजराज कुँवर सौं षेलैं फाग।
फूली कुमुदनी ज्यौं झरि पराग॥
नित अभंग केलि हित हियमें राग।
कहें कमला सी ये धनि सुहाग॥
फाग षेलि चलीं गावत जु वाद।
देषत 'श्रीभट्ट' केसौ प्रसाद।।८५॥

जलकेलि- दोहा

तरन हथारनि प्रिया कौं, सिषवत पिय सुषसार।
रचि लीला रुचि कारनी, षेलहिं वारि बिहार॥

पद-(राग-सारंग, इकताल)

षेलैं वारि बिहार बिहारनी।
रचि रंजन मंजन मिस लीला, रसिकलाल रुचिकारनी॥

जमुन तरंग रहसि रस पूरन, अंगन अंसुक हारनी।
'श्रीभट्ट' नटनागर प्यारीकौं, सिषवत तरन हथारनी॥८६॥

॥दोहा॥

मेलत कलिका कमल की, झेलत झुकि रसझेलि।
राजत अति जलजान पै, करत जुगल जलकेलि॥

पद–(राग–सारंग, इकताल)

जलकेलि करत रस कंदनी।
राजमान जलजान उपर दोउ, कान्ह भानु की नंदनी॥
कलिका नवल कमल की मेलत, झेलत सरस सुगंधनी।
'श्रीभट' जानै कौन रसिक दोउ, डारत नेहरस फंदनी॥८७॥

वर्षाऋतु–बिहार– दोहा

ठाढ़े गाढ़े कुंज तर, बाढ़े मैन मरोर।
भीजत कब इन दृगन ते, देषौं जुगलकिसोर॥

पद–(राग–मल्हार, इकताल)

भींजत कब देषौं इन नैंना।
स्यामाजू की सुरँग चूँनरी, मोहन कौ उपरैंना॥
जुगलकिसोर कुंज तर ठाढ़े, जतन कियौ कछु मैंना।
उमगी घटा चहूँदिस 'श्रीभट', जुरि आई जलसैंना॥८८॥

॥ दोहा ॥

बसन भीजिहैं भामिनी, छिनकि निवारौ मेह।
मोहि सहित लायक तुमहिं, छता हमारौ एह॥

पद-(राग-मल्हार, इकताल)

श्रीराधूजू सुंदर छता हमारौ।
मोहि सहित श्रीस्यामा लायक, बन्यौ जु बनिक विचारौ॥
भीजैंगे जु वसन-तन भामिनि, छिन इक मेह निवारौ।
'श्रीभट्ट' हठ न कियौ हित जान्यौ, आनिगह्यौ हिय प्यारौ॥८९॥

॥ दोहा॥

जमुना जलमें निरषहीं, झुकि चंचल निज झांहि।
दोउजन ठाड़े लपटि उर, एकहि षुहिया मांहि॥

पद-(राग-मल्हार, इकताल)

ठाड़े दोउ एकै षुहिया माँहीं।
बंसीबट तट जमुना जल में, निरषत चंचल झांहीं॥
कारी कमरिया अंतर दंपति, स्यामा-स्याम लपटाहीं।
'श्रीभट' कृष्नकूट में कंचन, जल बरषत झलकाहीं॥९०॥

॥ दोहा॥

ज्यौं ज्यौं चूनरि सगवगी, त्यौं त्यौं लावत हीय।
भीजत कुंजन ते दोऊ, आवत प्यारी पीय॥

पद-(राग-केदारौ, तिताल)

भीजत कुंजन ते दोऊ आवत।
ज्यौं ज्यौं बूँद परत चूनरि पै, त्यौं त्यौं हरि उर लावत॥
अति गंभीर झीनें मेघन की, द्रुमतर छिन विरमावत।
जै 'श्रीभट्ट' रसिक रसलंपट, हिलमिल हिय सचुपावत॥९१॥

हिंडोरा-
दोहा

वटि जुटि दुहुँ ओरैं दोऊ, तन घन दामिनि भोर।
फूल पलवे उर झूलहीं, लाडिली लाल हिंडोर॥

पद–(राग–मल्हार, इकताल)

झूलत लाडिलीलाल हिंडोरैं।

फूलफबे अँग-अंगनि सब सषि, बटिजुटि दोउ दुहुँ ओरैं।
खंभ अधारक डोल अमोलक, नवल पाट की डोरैं।
जामें नवल किसोर-किसोरी, अपनी अपनी छोरैं।
कारी घटा छटानि के डोरा, मोरा बोलत जोरैं।
कोकिला सुरकल जलकन वरषत, थिर गंभीर घनघोरैं॥
सबै ओर सुंदर तें सुंदर, बनी सषिन की कोरैं।
देषि दंपती झूलै फूलैं, दामिनी घन भोरैं॥
सनमुष बैठे उभै कुँवरि हरि, गावैं सषि सुर थोरैं।
स्यामा-स्याम सषी सुषकारी, झूलत सहज झकोरैं॥
जित जित झुलत डुलत तितही तित, सषी दृगन को मोरैं।
तन मन दै तनमै भई दयिता, दामोदर चित चोरैं॥
रजु भुज गहैं लहैं चित ईछति, रती असित तन गोरैं।
जै 'श्रीभट' बंसीबट तट निरषत, उठि उर हरष हिलोरैं॥९२॥

॥ दोहा ॥

जमुना बंसीबट निकट, हरन हिंडोरैं हीय।
रंगदेव्यादि झुलावहीं, झूलत प्यारी पीय॥

पद–(राग–मल्हार, इकताल)

हिंडोरैं झूलत हैं पिय प्यारी।

श्रीरंगदेवि सुदेवि विसाषा, झोटा देत ललितारी॥
श्रीजमुना बंसीवट के तट, सुभग भूमि हरियारी।
तैसेइ दादुर मोर करत धुनि, सुनि मन हरत महारी॥

घन गरजनि दामिनि तें डरि पिय, हिय लपटी सुकुँवारी।
जै 'भट्ट' निरषि दंपति छबि, देत अपनपौ बारी॥१३॥

पवित्रा- दोहा

कान्ह प्रान के त्रान हित, जसुमति गरग बुलाय।
कह्यौ पवित्रा दाम रचि, पहिरावहु रिषिराय॥

पद-(राग-मल्हार, इकताल)

पवित्रा पहिरैं कुँवर कन्हाई।
अति अभिराम दाम मनु दामिनि, घन स्यामै लपटाई॥
पवित्रेस के प्रान-त्रान हित, जानि जतन जसुभाई।
भक्ति भाव सनमान सहित जब, लीने गरग बुलाई॥
तुम हमरे घर के जु पुरोहित, लगौं तिहारे पाँई।
यह बालक चपला सों न चौंकै, सोई करौ उपाई॥
सावन सुकल पच्छ एकादसि, गोप मिले सब आई।
बोले गरग विचार मंत्र तुम, सुनौ भले नँदराई॥
पचरँग पाट की दाम रचावौ, नाना रतन लगाई।
आगम निगम मंत्र सौं नीके, रच्छा करौ बनाई॥
सुने बचन आचारज के, ब्रजराज सोई करवाई।
मंत्र पवित्रा स्याम दाम गर, गरग दई पहिराई॥
मानौ घन थिर कीनी दामिनि, सोभा लगत सुहाई।
बाढ्यौ मंगल सब ब्रजपुर में, 'श्रीभट्ट' भई मनभाई॥१४॥

लालजू की बधाई- दोहा

भागवती जसुमति अति, भई प्रफुलित लषि लाल।
गोकुल मंगल आज साषि, बाढ़्यौ विसद विसाल॥

पद-(बधाई, इकताल)

गोकुल मंगल आजु बधाई।
रानी जसुमति के प्रगटे हैं, सुंदर कुँवर कन्हाई॥
गोपी ओपी थार लिये कर, रवि छबि देषि लजाई।
गावत धावत अति छवि पावति, सूरति लगति सुहाई॥
देषि देषि मुष स्यामसुन्दर कौ, अँग अंगनि सचुपाई।
भागवती जसुमति रानी अति, सुत जायौ सुषदाई॥
निरतत कीरति मुषिया निज मुष, कहि कहि बहुत बड़ाई।
ब्रजरानी सनमानी तैसैं, जो जैसैं मनभाई॥
नंदसदन में दूध दही की, मची कीच अधिकाई।
गोपी गोप ग्वालगन अनगिन, आनँद मगन महाई॥
भाग सराहत ब्रजरानी के, भाषत भूप भलाई।
कहत आज हम व्रजवासिन की, सकल आस पुरवाई॥
जग वंदन नँदनंदन जायौ, सुष छायौ ब्रजआई।
जै 'श्रीभट्ट' रसिक भक्तन मन, भई महा मुदिताई॥९५॥

प्रियाजू की बधाई- दोहा

ब्रजजन गोपी गोपजन, नंदादिक मनमोद।
सुनत जनम राधा चले, मिलि बरसाने कोद॥

पद-(बधाई, इकताल)

आज ब्रजजन मिलि मंगल गावैं।
गोपी गोप भाग कीरति के, गाय गाय प्रगटावैं॥
प्रगटी श्रीराधा रूप अगाधा, सब सुष साधा नावैं।
मिलि आये नंदादिक सबही, प्रेम परस्पर भावैं॥

कोइक गावैं कोई बजावैं, कोई दही लै धावैं।
आय आय बरसाने बीथिन, जै जैकार करावैं॥
भानु नंद सौं मिले धाय कैं, अंक सो अंक लगावैं।
'श्रीभट' निकट निहारि राधिका, स्याम नैंन सचु पावैं॥९६॥

रासविहार- दोहा

मोहन वन जन माल पै, मधुकर करत गुँजार।
श्रीभट लटक सुवासना, अटके नन्दकुमार॥

पद-(राग-केदारौ, ताल-यात्रा)

राजई समाज आज मधुप ज्यौं मुकुंद चंद।
उद्यत उरोज ब्रज सुंदरी सरोज वृंद॥
जटित फटिकमनि धरासर विविध विद्रुम वीचिका वर,
वलित राग वल्लवी कुच चक्रवाक विहग द्वंद।
गोपी मंडल कमलमाल धमिल षलित ते सिवाल,
नाल जानु वय समान तन सुपान स्वेदविंद॥
नवल बालुका अनूप लावनि गुन गन सरूप,
दल विकास विमल तास सुद्ध प्रेमता सुगंद।
गंभीर धीर गान गुंज भ्रमर निर्त करत मंजु,
तान मान देत लेत सरस मुषसुधा सुछंद॥
चीर उड़नि कृष्न स्याम स्त्रग तैं बैजंति दाम,
जुगल मिलन षटक चलन अरुनता प्रिया स्कंद।
स्वेद प्राग पतित पंक उन्नता हरि चंदन टंक,
[illegible] द॥

कर्निका जुग करन तूल बहुल कंठ सीसफूल,
जलज हमेल बीच रेल रज सिंदूर झलक संद।
मधुरद मकरंद अधर केसर आनंद कंद,
(जै) श्रीभट लपटानि रुचिर नीलांबर पीत फंद॥९७॥

॥ दोहा ॥

कर वर अंबुज कंठभुज, मरकत कनक स्थूल।
श्रीभट रसमय तट रमत, राधा मन अनुकूल॥

पद-(राग-केदारौ, इकताल)

फूली कुमुदिनी सरद सुहाई।
जमुना तीर धीर दोउ विहरत,
कमल नील-पीत कर माई॥
नील बरन स्यामा रुचि कीनी,
अरुन बरनता हरि मन भाई।
'श्रीभट' लपटि रहे अंसन कर,
मानौ मरकत कनक जराई॥९८॥

ब्याह-

दोहा

वेदी पुलिन विराजही, मंडप वेलि तमाल।
नच्यौ किधौं यह रच्यौ है, ब्याह बिहारीलाल॥

पद-(राग-मारू, इकताल)

श्री ब्रजराज के जुवराज मानौ,
ब्याह वृन्दाबन रच्यौ।
पुलिन वेदी विराजे दंपति,
देखि देखि सखि मन सच्यौ॥

ह्वै पुरोहित रिचा उचारत,
वेलि तमाल मंडप षच्यौ।
जै 'श्रीभट' भाँवरि परत नटवर,
अंकमाल प्रिया संग नच्यौ ॥९९॥

॥ दोहा ॥

तिहिछिन की बलिजाऊँ सषि, जिहिछिन भाँवरि लेत।
लाल बिहारी साँवरो, गौर बिहारिनि हेत॥

पद-(राग-बिहागरौ, ताल-चम्पक)

जैसिय बिहारिनि गौर बिहारीलाल साँवरे।
तिहि छिन की बलिजाऊँ सषीरी, परत जिहिछिन भाँवरे॥
कंचनमनि मरकतमनि प्रगटी, बरसाने नंदगाँव रे।
विधिना रचित न होय जै श्रीभट राधामोहन नाँवरे॥१००॥

॥इति श्रीआदिवाणी युगलशतक श्रीउत्सव-सुख सम्पूर्णम्॥

॥ दोहा ॥

श्रीभट प्रगटत जुगलसत, पढ़ै कंठ त्रिकाल।
जुगल केलि अवलोक तें, मिटै विषै जंजाल॥
नयन वान पुनि राम ससि, गनों अंक गति वाम।
प्रगट भयो श्रीजुगलसत, यह संवत अभिराम॥

महावाणीकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी के कृपापात्र श्रीरूपरसिकदेवजीकृत-

॥ छप्पय ॥

रूपरसिक सब संतजन अनुमोदन याकौ करौ॥
दस पद हैं सिद्धांत वीसषट ब्रजलीला पद।
सोलह सहज सुख एक बीस हद॥

आठ सुरत इक-ऊनवीस उछव सुष लहीये।
श्रीजुत श्रीभटदेव रच्यो सत जुगल जु कहीये॥
निज भजनभाव रुचितैं कीये इतै भेद यह उरधरौ।
'रूपरसिक' सब सन्त जन अनुमोदन याको करौ॥

श्रीयुगलशतक टीकाकार श्रीलड़ैतीदासजी कृत-

फल-स्तुति

॥दोहा॥

जो याकों समुझै पढ़ै, मनन करै मनलाय।
जुगल-धाम पावे सही, गर्भवास मिटि जाय॥
श्रीभट पद वंदन करो, श्रीभट को करुँ ध्यान।
श्रीभट के पद गाय कें, पिय प्यारी पहिचान॥
श्रीभट प्रगट्यो जुगलसत, जीवन को हित चाहि।
पढै विचारि हिय धारि जो, सो सर्वोपरि आहि॥
श्रीलाडिलीजू की सहचरी, श्रीरंगदेवी नाम।
निम्बार्क ह्वै अवतरे, जग दीनों विश्राम॥
जग दीनो विश्राम, सनातन धर्म चलायो।
तिन ही की सबसखी, आचारज भये समुदायो॥
श्रीभट ह्वै हितू सहचरी, प्रगट कियौ शृंगार।
श्रीयुगलसत विख्यात है, रसिकन को आधार॥

अतिरिक्त पद

॥ पद ॥

हे निम्बार्क दीन बंधु सुन पुकार मेरी।
पतितन में पतित नाथ सरन आयौ तेरी॥
मात तात भगिनी भ्रात परिजन समुदाई।
सबही संबंध त्याग आयौ सरनाई॥
काम क्रोध लोभ मोह दावानल भारी।
निसदिन हौं जरौं नाथ लीजियै उवारी॥
अंबरीष भक्त जानि रच्छा करि धाई।
तैसेई निजदास जानि राषौ सरनाई॥
भक्तबछल नाम नाथ वेदनि में गायौ।
'श्रीभट' तव चरन परसि अभैदान पायौ॥१॥

॥ पद ॥

मंगल मूरति नियमानंद।
मंगल जुगलकिसोर हंसवपु, श्रीसनकादिक आनंदकंद॥
मंगल श्रीनारदमुनि मुनिवर, मंगल निंबदिवाकर चंद।
मंगल श्रीललितादि सषीगन, हंसबंस संतन के वृंद॥
मंगल श्रीवृन्दावन जमुना, तट बंसीवट निकट अनंद।
मंगलनाम जपत जैश्रीभट, कटत अनेक जनमके फंद॥२॥

॥ पद ॥

रे मन वृन्दाविपिन निहार।
जद्यपि मिलै कोटि चिंतामनि, तदपि न हाथ पसार॥
विपिनराज सीमा के बाहिर, हरिहू कों न निहार।
जै 'श्रीभट्ट' धूरि धूसर तन, यह आसा उर धार॥३॥

॥ श्रीयुगल-नाम-महिमा ॥

राधानाम सुधायुक्तं कृष्ण-नाम रसायनम्।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय व्याधिभिस्सन वाध्यते॥

(रासोल्लास-तन्त्र)

राधा नाम अमृत से युक्त है, कृष्णनाम रस-रूप है अर्थात् सम्पूर्ण रसों का सिन्धु है, जो प्रातःकाल उठकर श्रीयुगलकिशोर का नाम जपता है, वह सर्वव्याधियों से छूट जाता है।

येनोच्येरुच्यते रागै राधाकृष्णपद द्वयम्।
वाम दक्षिणत तस्य राधाकृष्णोनुधावति।।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो राधाकृष्णोति कीर्तयन्।
सुखेन पुण्य सम्पतिं लभते वा स वैष्णवः।।
श्रीपूर्व जयपूर्वं वा राधाकृष्णोति कीर्तयन्।
लक्षनाम सहस्त्राणां फल माप्नोति मानवः।।
राधाकृष्ण महामन्त्रं यो जपेत् भक्तिपूर्वकम्।
अन्तकाले भवेत्तस्य राधाकृष्णोति संस्मृतिः।।

जिसने ऊँचे स्वर तथा अनुराग से राधाकृष्ण इस दो पद को उच्चारण किया उसके दायें-बाँये में श्रीराधाकृष्ण संग-संग चलते हैं। वह वैष्णव सर्व पापों से छूट जाता है और सुख से पुण्य-सम्पति (श्रीयुगल) को प्राप्त करता है। जो श्री तथा जय, पूर्व में बोलकर राधाकृष्ण का कीर्तन करता है, वह लक्ष-सहस्त्र भगवन्नामों के बराबर फल प्राप्त करता है। "राधेकृष्ण राधेकृष्ण कृष्णकृष्ण राधे राधे। राधेश्याम राधेश्याम श्यामश्याम राधेराधे" इस सोलह नामों वाले महामंत्र का प्रेम से जप करता है, उसे अन्तकाल में भी श्रीराधाकृष्ण का स्मरण रहता है।

सन्त-महानुभावों की दृष्टि में श्रीभट्टदेवाचार्यजी

समस्तनानाविधदेवतागणैर्विरञ्चिगंगाधरशारदादिभिः।
मूर्द्धाभिवंद्यारूणपादपद्मां, श्रीश्रीहितां संततमानतोऽस्मि॥

-श्री श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी

जे नर आवैं सरन ताप त्रय तिनके हरहीं।
तत्त्वदर्सी ते होहिं हस्त, जा मस्तक धरहीं॥
गुननिधि रसिक प्रवीन, भक्ति दसधा कौ आगर।
श्रीराधाकृस्न स्वरूप ललित, लीला रस सागर॥

कृपा दृष्टि संतन सुखद, भक्त भूप द्विजवंस वर।
कल्पविटप श्रीभट प्रगट, कलि कल्मष दुष दूरि कर॥

-श्री रूपरसिकदेवजी

मधुर भाव संबलित ललित, लीला सुबलित छबि।
निरषत हरषत हृदै प्रेम, बरषत सुकलित कबि॥
भव निस्तारन हेत देत, दृढ़ भक्ति सबनि नित।
जासु सुजस ससि उदै हरत, अति तम भ्रम स्त्रम चित॥
आनंद-कंद श्रीनंदसुत, श्रीवृषभानु-सुता भजन।
श्रीभट सुभट प्रगट्यौ अघट, रस रसिकन मनमोद घन॥

–श्रीनाभादासजी

नव रस रस-परबीन, गोप लीला बिस्तारी।
मन बच क्रम उर ध्यान, नमो प्रीतम बस प्यारी॥
नित प्रति रास-विलास, ज्ञान गिरधर गुन गाता।
मीन नीर ज्यूं ब्रित देह, कुलक्रित तज नाता॥
कौंन जगत में कौ वन है, लवलीन भये चित वित्त हर।
अघट प्रेम 'श्रीभट' सुजस, नवधा आगर पुन्य धर॥

–श्री[illegible]लजी

बर्द्धमान 'श्रीभट' अरु गंगल, ब्रज वृन्दावन गायौ।
करि प्रतीति सर्वोपरि जान्यो, ताते चित्त लगायौ॥

-श्रीध्रुवदासजी

तिन प्रसाद श्रीभट लही, निरवधि रस की रासि।
जो संपति परति न कही, दंपति भलै उपासि॥

-श्रीघनानन्दजी

नमो जयति श्रीभट रिषिराज।

भक्तराज अरु रसिक राज सुभ,
श्रीबृन्दावन रस की पाज॥
स्यामा स्याम निकुंज केलि गुन,
मत्त रहत मिलि रसिक समाज।
रंगादिक सँग हितू सिहेली,
कलि प्रगटे परिकर जुत साज॥
श्रीगोविन्दसरन हठि हिय धरि,
ये ही सबके सारन काज।
धीरज धारि चरन रज सिर पर,
भव-सागर कौ तिरन जहाज॥

-श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी

श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी की बधाई

नमो नमो जै श्रीभट देव।

रसिकअनन्य जुगल पदसेवी, जानत श्रीवृन्दावन भेव॥

राधावर बिन आन न जानत, नामरटैं निसदिन यह टेव।

प्रेमरंग नागर सुखसागर, श्रीगुरु भक्ति सिरोमनि सेव॥१॥

श्रीभट जनम लियो भुव माहीं।

नवल नवेली हितू सहेली, जग हित आदि गिरा प्रगटाहीं॥

रसिक जनन कौं रस अँचवायौ, लीला विविध प्रकासी।

साधन सिद्धि वस्तु दरसाई, तिहिं लखि रंगमहल ह्वै बासी॥

हंसबंस निज सुजस बढ़ायौ, आप रूप भये (श्री) हरिव्यास।

दंपति केलिकुंज सुखगायौ, गोविन्दसरन की पुजई आस॥२॥

जै जै श्रीभटदेव रसिक रस भूषणा।

प्रगटे आनन्द कन्द मधुर रस पूषणा॥

लीला सरस निकुंज रहस्य रस गायकैं।

किये सनाथ अनाथ नाम सुनायकैं॥

सुनाय कैं जस जुगल रस, माधुर्य लीला विस्तरी।

रसिकजन हित बढ्यौ अति, उत्साह सुख निधि की घरी॥

गावो मंगलचार सजनी, प्रणत प्राण पियूषणा।
जै जै श्रीभटदेव रसिक रस भूषणा॥१॥
जै जै श्रीभटदेव जुगल हितु सहचरी।
प्रगट होयकैं जीव परम करुना करी॥
श्रीवृन्दावन बास प्रीति सोई दृढ़ धरी।
स्यामा-स्याम पद कंज लुब्ध संग्रहकरी॥
करी संग्रह उत्साह कौतिक, परम चित के चाव सौं।
आज कौ सो दिवस सजनी, मिले जिय के भाव सौं॥
विधना आज की सुभ घरी, प्रेम आनंदित करी।
जै जै श्रीभटदेव जुगल हितु सहचरी॥२॥
जै जै श्रीभटदेव जुगल जस विस्तरी।
रसिक जनन आनन्द सिंधु रस मन भरी॥
नर नारी अति उत्साह कौतिक करैं धायकैं।
लै दही हरद मिलाय सुछिरकैं आयकैं॥

आयकैं अति भाव तिनको, प्रेम नहिं बरनौं परैं।
करैं नृत्य गीत उमाह तन मन, वारि मुष छबि हिय धरैं॥
कहि सकै को आनन्द जेतो, सबनि के जिय नित भरी।
जै जै श्रीभटदेव जुगल जस विस्तरी॥३॥

जै जै श्रीभट देव रसिक चूड़ामनी।
बिबि गुन गाय रिझाय भये निधि के धनी॥
किये अपनाय दृढ़ाय प्रेम सरसाय कैं।
जीव अमित भये पार चरन-रज पायकैं॥
पायकैं सुख-सिंधु बाढ्यो, प्रताप जग जस छै रह्यौ।
प्रेम भक्ति प्रवाह उमग्यौ, भाग जाके तिन लह्यौ॥
ऐसे रसिक अनन्य जग में, 'कृष्णअली' के धनी।
जै जै श्रीभटदेव रसिक चूड़ामनी॥४॥

श्रीवृन्दावन-महिमा

श्रीमद्वृन्दाटवि! मम हृदि स्फोरयात्म स्वरूप-
मत्याश्चर्ये प्रकृतिपरमानन्द विद्यारहस्यम्।
पूर्णब्रह्मामृतमपि ह्रिया वाऽभिधातुं न नेति
ब्रूते यत्रोपनिषदइ त्रत्य वार्त्ता कुतस्त्या॥
राधाकृष्ण विलासपूर्ण सुचमत्कारं महामाधुरी
सारस्फार चमत्कृतिं हरिरसोत्कर्षस्य काष्ठा पराम्।
दिव्यं स्वाद्यरसैक रम्य सुभगाशेषं न शेषदिभि:
सेशैर्गम्यगुणौघपारमनिशं संस्तोमि वृन्दावनम्॥

हे वृन्दाटवि! अतिआश्चर्यजनक स्वाभाविक परमानन्द-विद्या-रहस्ययुक्त जो आपका स्वरूप है, उसकी मेरे हृदय में स्फूर्ति कराओ। पूर्णब्रह्मामृत के ही वर्णन करने में लज्जित होकर जब उपनिषद् "नेति नेति" पुकार रहे हैं, तब इस श्रीवृन्दावन की महिमा के विषय में और क्या कहा जाये? जो स्थान श्रीराधाकृष्ण के विलास-सौभाग्य से पूर्ण चमत्कारित्वजनक है, जो स्थान श्रीकृष्ण के शृंगार-रस की पराकाष्ठा का प्रतिपादक है, अप्राकृत एवं आस्वादनीय मुख्य उज्ज्वल-रस के अशेष सौभाग्य से गौरान्वित है, ईश्वर सहित शेषादि देवगण पर्यन्त जिसकी गुणराशी का वर्णन करते हुए पार नहीं पा सकते, ऐसे वृन्दावन की मैं निशदिन सम्यक् प्रकार से स्तुति करता हूँ।

(श्रीवृन्दावनमहिमामृतम्)

सर्वेश्वरी-भानुसुता-प्रमोदे, के के न जाने प्रयतन्ति लोके।
भाषा पदैः श्रीव्रजवल्लभा सा, श्रीं भट्टदेवेन समर्चिता श्रीः॥

सोचो यहाँ कौन नहीं करैं हैं,
श्रीभानुजापाद - प्रमोद - चेष्टा।
भाषा पदों को रचि भट्टदेव,
कीन्ही कृपावान् व्रजवल्लभा सा॥

श्रीकृष्ण की प्राणाधिपा श्रीराधिकाजी को कौन प्रसन्न करना नहीं चाहता। सभी प्रयत्न करते हैं, किन्तु उन्हें प्रसन्न करना है बड़ा कठिन। उन्हीं श्रीवृषभानुनन्दिनी ब्रजवल्लभाजी को श्रीभट्टदेवाचार्यजी ने इस ब्रजभाषा के पदों द्वारा प्रमुदित (प्रसन्न)